अमर उजाला

नई दिल्ली । शुक्रवार, 21 जून 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

एक महान कार्य में लगन और कुशलता से काम करने पर भले ही तुरंत पहचान न मिले, पर अंततः वह सफल जरूर होता है।
- जवाहर लाल नेहरू

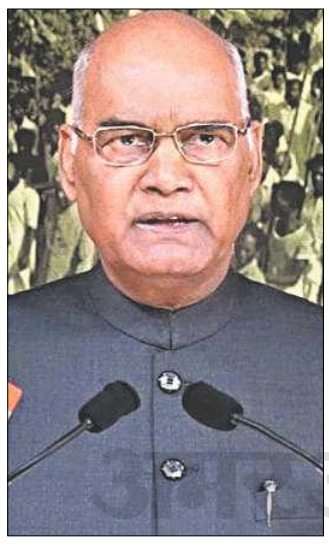

राष्ट्रपति ने संसद के संयुक्त अधिवेशन को संबोधित करते हुए जाति और धर्म के आधार पर भेदभाव खत्म किए जाने की बात की है, लेकिन उनके यह शब्द महज औपचारिक न रह जाएं, यह सुनिश्चित करने की सर्वाधिक जिम्मेदारी सरकार की ही है।

नए भारत का खाका

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए सरकार के पांच साल का जो खाका प्रस्तुत किया है, उसे पिछले पांच साल के उसके कामकाज की निरंतरता में देखा जा सकता है। पिछली यूपीए सरकार के दो कार्यकाल के बाद प्रधानमंत्री मोदी की अगुआई में एनडीए सरकार को लगातार दूसरा कार्यकाल मिला है, ऐसे में उसके पास यह अवसर है कि वह पिछले कार्यकाल के अपने अधूरे कार्यों को पूरा कर सके। पिछले कार्यकाल में मोदी सरकार ने काले धन और आतंकवाद के मुद्दे पर खासा जोर दिया था, लेकिन कार्यकाल के आखिर में जाकर ही लोकपाल की नियुक्ति हो सकी थी। राष्ट्रपति ने काले धन और आर्थिक अपराध पर अंकुश लगाने के लिए रेरा ऐक्ट और आर्थिक अपराध (भगोड़ा) अधिनियम का जिक्र करते हुए रेखांकित किया है कि इनके कारण काले धन और आर्थिक अपराधों को नियंत्रित करने में मदद मिली है। इसमें संदेह नहीं कि इसी की वजह से विजय माल्या, मेहुल चौकसी और नीरव मोदी जैसे भगोड़े आर्थिक अपराधियों पर भी शिकंजा कसा है। प्रधानमंत्री मोदी ने देश को पचास खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने की बात पहले ही कही है, जिसे राष्ट्रपति ने भी अपने अभिभाषण का हिस्सा बनाते हुए एक अहम बात की है कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूती तभी मिल सकती है, जब ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हो। सरकार ने इसके लिए किसानों को सालाना छह हजार रुपये की सीधी मदद देना शुरू भी कर दिया है, और 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य रखा है। जाहिर है, इस कार्यकाल में सरकार को ग्रामीण अर्थव्यवस्था में निवेश के नए रास्ते तलाशने होंगे, जबकि अभी ग्रामीण भारत में खपत को बढ़ाना सबसे बड़ी चुनौती है। वहीं ग्रामीण ही नहीं, पूरे भारत में जल संकट एक बड़ी चुनौती है, जिसकी ओर राष्ट्रपति ने ध्यान खींचा है और रेखांकित किया है कि यह सरकार की प्राथमिकता में है, जैसा कि उसने जल शक्ति मंत्रालय की स्थापना कर दिखाया भी है। राष्ट्रपति ने जाति और धर्म के आधार पर भेदभाव खत्म किए जाने की बात की है, लेकिन उनके ये शब्द महज औपचारिक न रह जाएं, यह सुनिश्चित करने की सर्वाधिक जिम्मेदारी सरकार की ही है। उन्होंने सहकारी संघवाद की बात भी की है, मजबूत, सुरक्षित और समावेशी भारत के निर्माण में इसके खास मायने हैं; यह सरकार को देखना होगा कि इसका अक्षरशः पालन किस तरह से हो।

मजबूत सेना, कमजोर प्रधानमंत्री

पीपीपी और पीएमएल (एन) के रूप में संयुक्त विपक्ष ने इमरान सरकार के लिए अपना पहला बजट पारित करवाना मुश्किल कर दिया है। यदि सरकार अपना पहला बजट पारित नहीं करवा पाती है, तो वह गिर जाएगी।

मरिआना बाबर, पाकिस्तानी पत्रकार

पाकिस्तान में सिर्फ तब ऐसा होता है, जब सड़कों पर आपाधापी नजर नहीं आती और सारे लोग टेलीविजन सेटों के पास जम जाते हैं। ऐसा तब होता है, जब पाकिस्तान और भारत के बीच कोई क्रिकेट मैच हो रहा हो। पटाखे पहले से तैयार रखे जाते हैं, ताकि पाकिस्तान के जीतने पर जश्न मनाया जा सके। पिछले हफ्ते भी पाकिस्तानी टीवी से चिपके हुए थे। पाकिस्तान में वैसे भी अक्सर यह कहा जाता है, दुनिया में सिर्फ एक मैच होता है और वह है भारत और पाकिस्तान का।

लेकिन इंग्लैंड में विश्व कप के दौरान हुए मैच से दो अहम बातें निकली। पहली यह कि कप्तान विराट कोहली और टीम इंडिया हर मामले में लाजवाब थी। फिर यह फिटनेस की बात हो या एकाग्रता, बैटिंग, बॉलिंग और फील्डिंग की, साफ दिख रहा था कि यह टीम विश्व कप के लिए खासी मेहनत कर रही है। दूसरी बात, आम पाकिस्तानियों ने खेल भावना का प्रदर्शन किया और खुलकर भारतीयों की तारीफ की। वास्तव में इंग्लैंड में मैच शुरू होने से पहले मोटरसाइकिल पर सवार ऐसे पाकिस्तानी युवाओं की तस्वीरें आई थीं, जिन्होंने ऐसी जर्सी पहन रखी थी जिनके पीछे 'विराट' लिखा हुआ था। पाकिस्तान के मैच हारने के बाद ट्वीटर पर गहरी हताशा तो देखी ही गई, इसके साथ ही हंसी-मजाक भी शेयर किए गए। एक पाकिस्तानी महिला ने इच्छा जताई कि काश विभाजन के दौरान रेडक्लिफ लाइन इस तरह खींची जाती कि विराट कोहली का घर पाकिस्तान के हिस्से में आ जाता! मेरे कई भारतीय दोस्तों ने मुझे बताया कि भारत में ऐसे पाकिस्तानी काफी सराहे जा रहे हैं, जो अपने खुद के खिलाड़ियों का मजाक बना रहे हैं। साथ ही उन्होंने यह भी कहा, 'यदि भारत में ऐसा किया जाता तो फौरन ही हमें राष्ट्र विरोधी करार दिया जाता।'

नया आईएसआई प्रमुख

बहरहाल, पाकिस्तानी राजनीति की हकीकत की ओर लौटते हैं। इस बीच, एक बड़ी और अप्रत्याशित खबर पाकिस्तानी सेना से आई जहां खुफिया एजेंसी आईएसआई को नया चेहरा मिला। यह अप्रत्याशित इसलिए है, क्योंकि आईएसआई के निर्वतमान प्रमुख लेफ्टिनेंट असीम मुनरो की नियुक्ति हाल ही में हुई थी और वह सिर्फ कुछ महीने ही इस पद पर बने रह सके। सामान्य तौर पर आईएसआई प्रमुख कई वर्षों तक पद पर बने रहते हैं और जनरल परवेज कयानी को तो आईएसआई प्रमुख के पद से पदोन्नत कर सेना प्रमुख बनाया गया था। जिस नए व्यक्ति की नियुक्ति की गई है, वह पूर्व प्रधानमंत्री और पीएमएल (एन) के प्रमुख नवाज शरीफ के खिलाफ राजनीतिक रूप से सक्रिय थे। लेफ्टिनेंट जनरल फैज हमीद आईएसआई के नए प्रमुख हैं और वह आईएसआई के आतंकवाद विरोधी खुफिया विंग के प्रमुख रह चुके हैं। जनरल फैज हमीद पहली बार उस वक्त सार्वजनिक रूप से चर्चा में आए थे, जब उन्होंने आतंकी संगठन टीटीपी (तहरीके तालिबान पाकिस्तान) के साथ शांति समझौता कराने में दखल दिया था, यह तब की बात है जब टीटीपी ने सड़क ब्लॉक कर रावलपिंडी और इस्लामाबाद के बीच महीनों तक संपर्क रोक दिया था। उस समय सुप्रीम कोर्ट नवाज शरीफ को बर्खास्त कर चुका था और शाहिद खान अब्बासी बेहद कमजोर थे। उस समय टीवी कैमरों की पूरी चमक के बीच जनरल फैज हमीद सामने आए थे और उन्होंने टीएलपी (तहरीके लब्बैक पाकिस्तान) के मुल्लाओं के साथ विवादस्पद समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।

अमूमन पाकिस्तानी सेना में सबसे मजबूत शख्स होता है चीफ ऑफ आर्मी स्टॉफ और वह अपने वरिष्ठ कमांडरों के साथ जो नीतियां बनाता है, उसे ही बाकी लोग मानते हैं। यह दिलचस्प है कि चीफ ऑफ आर्मी स्टॉफ जनरल बाजवा संभवतः अक्तूबर 2019 में रिटायर होने वाले हैं। सवाल उठ रहा है कि क्या वह जनरल परवेज कयानी की तरह सेवावृद्धि चाहेंगे। यदि वह सेवावृद्धि चाहेंगे तो बेहद कमजोर प्रधानमंत्री इमरान खान निश्चित रूप से ऐसा कर उपकृत होना चाहेंगे। लेकिन यह पाकिस्तानी सेना के लिहाज से ठीक नहीं होगा। जनरल परवेज कयानी को तीन वर्ष की सेवावृद्धि जरूर मिल गई थी, लेकिन सेना के भीतर उनके प्रति सम्मान घट गया था और लोग खुलेआम उनके खिलाफ बोलने लगे थे।

वास्तव में पाकिस्तान में सेना कभी इतनी मजबूत नहीं रही और प्रधानमंत्री कभी इतने कमजोर नहीं रहे। सारे देश में इमरान खान की आलोचना हो रही है, जिससे उनकी सरकार बेहद अलोकप्रिय हो गई है। वह सेना के समर्थन से प्रधानमंत्री बने हैं और उन्हें उसका समर्थन हासिल है। जो लोग वर्षों से उनके समर्थक थे और जिन्होंने उन्हें वोट दिया था, वे महंगाई और बेरोजगारी जैसे मुद्दों के कारण उनके खिलाफ हो गए हैं। इतिहास में पाकिस्तान आर्थिक रूप से इतना कमजोर कभी नहीं रहा। एक डॉलर 157 पाकिस्तानी रुपये के बराबर हो गया है और यह पूरे क्षेत्र में सबसे खराब विनिमय दर है। अजीब बात यह है कि मंत्रिमंडल में और प्रधानमंत्री के आसपास ऐसे बहुत कम लोग हैं जिनका संबंध मूलतः पाकिस्तान तहरीके इंसाफ (पीटीआई) से था। इनमें से अधिकांश लोग भुट्टो की पीपीपी या नवाज शरीफ की पीएमल (एन) से आए हैं या फिर वे जनरल परवेज मुशर्रफ की सरकार में मंत्री रहे।

सेना के समर्थन से इमरान खान ने विपक्ष के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की है, नतीजतन पीपीपी के नेता आसिफ अली जरदारी जेल में हैं। वहीं सिविल मूवमेंट ऑफ पाकिस्तान तहाफुज मूवमेंट के भीतर भय व्याप्त है, जिसके दो सांसदों को हिरासत में लिया गया है और जिन्हें बजट सत्र के दौरान सदन में जाने नहीं दिया गया। पाकिस्तानी संसद के नियम के मुताबिक जेल में बंद सांसदों को सत्र चलने के दौरान सदन में लाया जाता है। लेकिन इमरान खान ने स्पीकर को निर्देश दिए हैं कि जेल में बंद किसी भी सदस्य को रिहा नहीं किया जाए। पीपीपी और पीएमएल (एन) के रूप में संयुक्त विपक्ष ने सरकार के लिए अपना पहला बजट पारित करवाना मुश्किल कर दिया है। यदि पीटीआई सरकार अपना पहला बजट पारित नहीं करवा पाती है, तो वह गिर जाएगी। ऐसे में इमरान खान का राजनीतिक अस्तित्व बचेगा, अभी कहना मुश्किल है।

अंतर्ध्वनि

>> बी के एस अयंगर

मेरा शरीर मेरा मंदिर है और आसन मेरी प्रार्थनाएं

लोग मुझसे अयंगर योग के बारे में पूछते हैं। सच बताऊं, तो मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता। मैं सिर्फ भौतिक शरीर को मानसिक शरीर से, मानसिक शरीर को बौद्धिक शरीर से और बौद्धिक शरीर को आध्यात्मिक शरीर से जोड़ने की कोशिश करता हूं, ताकि वे संतुलन में रहें। सिर से पांव तक, सामने से पीछे तक, दाएं से बाएं तक हर आसन की अनुकूलतम स्थिति होती है और अंगों को उसके समानुपात में मोड़कर ये आसन किए जा सकते हैं। मुझे नहीं लगता कि योग में इससे अधिक मैंने कुछ किया है। यही हमारा पारंपरिक योग है, जिसे हमने अपने पूर्वजों से, अपने गुरुओं से, पतंजलि से प्राप्त किया है। किस्मत से मैं इस क्षेत्र में आ गया। मैं बेहद गरीब ब्राह्मण परिवार में पैदा हुआ था। कमजोरी, कुपोषण और गरीबी के कारण छोटी उम्र में ही टाइफॉयड, मलेरिया और टीबी से ग्रस्त हो गया। योग स्कूल चलाने वाले मेरे एक बहनोई मुझे अपने साथ मैसूर ले गए। योगाभ्यास के सिवा मेरे पास कोई विकल्प नहीं था, इसलिए मैं घंटों इसका अभ्यास करता रहा। उन दिनों मैं रोज करीब दस घंटे योग करता था। हालांकि बाद में मैं मैंने अलग-अलग आसनों पर ध्यान दिया। इस दौरान मुझे अनेक तकलीफें हुईं, कई बार भूखा तक रहना पड़ा, लेकिन मैं योग के रास्ते से डिगा नहीं। सच कहूं, तो योग ने मुझे जीने का नया अर्थ दिया है, खुद को और जीवन को देखने की एक नई दृष्टि दी है। इसलिए योग को मैं शारीरिक अभ्यास तक सीमित नहीं मानता। यह एक आध्यात्मिक अनुशासन है। हमारा शरीर धनुष है, आसन तीर, जबकि आत्मा उसका निशाना है। इस उम्र में भी मैं आधे घंटे तक शीर्षासन की स्थिति में रहता हूं। उम्र अधिक हो जाने पर लोग आसन और प्राणायाम की जगह ध्यान या जप को वरीयता देते हैं। मैं उस किस्म का साधक नहीं हूं। बुढ़ापे के डर से मैंने योगाभ्यास नहीं छोड़ा, बल्कि अभ्यास की अवधि बढ़ा दी है।

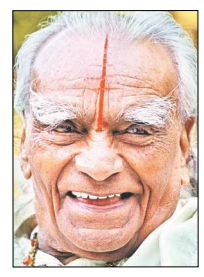

-विख्यात योगगुरु।

मंजिलें और भी हैं

>> अंकिता जैन

बस्ती के बच्चों को पढ़ाने की पहल असर दिखा रही

बच्चों का सुनहरा भविष्य बचपन में ही गढ़ा जा सकता है। यदि सही तालीम दी जाए, तो उन्हें ऊंचाइयों को छूने से कोई नहीं रोक सकता। इसी बात को अपने दिल में रखकर मैंने बस्ती में घूम रहे बच्चों को पढ़ाना शुरू किया था। मैं छत्तीसगढ़ में रायपुर की रहने वाली हूं। मैंने पत्रकारिता की पढ़ाई की है, साथ ही अभी एक गैर-सरकारी संस्था के लिए काम कर रही हूं। बचपन से ही मैं पढ़ाई के प्रति गंभीर थी, साथ ही हमेशा मैं जरूरतमंदों की मदद के लिए आगे रहती थी। अक्सर काम करने के बाद घर लौटते समय रास्ते में पड़ने वाली आदर्श नगर बस्ती में जब मैं इधर-उधर घूम रहे बच्चों को देखती, तो उनके लिए कुछ करने के बारे में सोचती। एक दिन मैंने उन बच्चों से बात की, तो मालूम हुआ कि इनमें से अधिकतर बच्चे स्कूल नहीं जाते। जो जाते हैं, वे केवल मिड डे मील के लिए जाते हैं। बातचीत करने के दौरान मैंने कई बच्चों से पूछा कि, वे बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं, तो इस पर चुप्पी पसर गई। बच्चों की खामोशी मुझे कुछ अजीब-सी लगी।

बच्चे हमारे देश-समाज का भविष्य हैं और इन्हीं से आगे चलकर देश को अच्छे नागरिक मिलेंगे।

कुछ देर बाद कुछ बच्चों ने मुझसे पूछा कि क्या आप हमें पढ़ाने आएंगी? थोड़ी देर मैं वहीं रही, उसके बाद घर आ गई। लेकिन यह सवाल बार-बार मेरे जेहन में घूमता रहा। और अगले दिन मैंने तय कर लिया कि अब मैं इन बच्चों को पढ़ाऊंगी। हालांकि वहां पढ़ाने के लिए सभी बच्चों और उनके माता-पिता को समझाना थोड़ा मुश्किल था, कि मैं नि:स्वार्थ भाव से बच्चों को पढ़ाने आई हूं। इसके साथ-साथ बच्चों को जोड़े रखना भी आसान नहीं था, पर मैंने उन्हें उनकी पसंद की चीजें देकर पढ़ने के लिए राजी कर लिया। अंतत: वे मेरी बात मान गए। शुरुआत में तो कम ही बच्चे आए, पर धीरे-धीरे इनकी संख्या बढ़कर करीब 60 हो गई। 'तालीम एक प्रयास' पहल के माध्यम से इन बच्चों की प्राथमिक शिक्षा की रीढ़ मजबूत करने के लिए मैं इन्हें पढ़ा रही हूं। छोटी बस्तियों के बच्चों को गणित और अंग्रेजी पढ़ने में ज्यादा परेशानी होती है। इनमें से ज्यादातर बच्चे ऐसे हैं, जिनके माता-पिता दिहाड़ी-मजदूरी कर अपना घर चलाते हैं। इसके लिए मैं इन्हें प्रत्येक रविवार को इन विषयों के बारे में अलग से पढ़ाती हूं। स्कूल से मिलने वाली पठन-पाठन सामग्री के अलावा पढ़ने के लिए उपयोगी जिस भी चीज की इन्हें आवश्यकता होती है, वह उन्हें समय-समय पर वितरित की जाती है, ताकि बच्चों की पढ़ाई में किसी भी प्रकार की दिक्कत न हो।

मैं जब बस्ती में पढ़ाने जाती थी, तो कई बार कुछ लोग मेरी हंसी उड़ाते थे कि 'यह देखो मैडम जी पढ़ाने आई है', लेकिन मैं उन लोगों की बातों पर ध्यान न देते हुए, बच्चों को निरंतर पढ़ाती रही और कुछ महीने बाद मैडम जी के नाम से चिढ़ाने वाले लोग ही व्यवस्था में सहयोग करने लगे। बस्ती में मैं हफ्ते में दो दिन पढ़ाने जाती हूं। इन कक्षाओं की शुरुआत करने का मेरा मकसद बच्चों को शिक्षा के साथ जोड़ना और उनकी बौद्धिक क्षमता का विकास करना था। इसके बाद जब पढ़ाई के प्रति बच्चों का भी सकारात्मक रुझान देखा, तो मेरी खुशी दोगुनी हो गई। मेरा मानना है कि छोटी बस्तियों में रहने वाले बच्चों में भी बहुत हुनर होता है, बस उसे सही दिशा की जरूरत है। अब इन बच्चों के माता-पिता की आंखों में सुकून है कि, इनके बच्चे अपना समय व्यर्थ नहीं करते और वे भी अब कुछ बनने का सपना देखते हैं। मेरी इच्छा ऐसे बच्चों के लिए एक स्कूल खोलने की है, जहां सारी सुविधाएं मौजूद हों और बच्चे अपना विकास कर सकें।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित

दो त्रासदी, दोहरा रवैया

कोलकाता में मृत मरीज के परिजनों ने डॉक्टरों के साथ जो किया, वह गलत था। वह बहुत बड़ी खबर बन गई। लेकिन उसके बाद मुजफ्फरपुर में सौ से अधिक बच्चों की मौत उतनी बड़ी खबर नहीं बनी, न ही बिहार सरकार को जिम्मेदार ठहराया गया।

सुभाषिनी सहगल अली

देश के तमाम सरकारी अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवाएं चरमरा रही हैं। केंद्र और अधिकतर राज्य सरकारों का ध्यान स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के बजाय उनके निजीकरण पर है। दुनिया में कहीं भी जनता के स्वास्थ्य की देखरेख निजी अस्पतालों और बीमा कंपनियों द्वारा नहीं, बल्कि सरकारी अस्पतालों और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं द्वारा की जाती है। पर हमारी सरकारों पर इसका कोई असर नहीं पड़ रहा है। ऐसे में प्रसार माध्यमों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। जनता के स्वास्थ्य से जुड़ी सच्चाई दिखाना, सरकारों की उदासीनता का खुलासा करना और अच्छे फैसलों का प्रचार करना जागरूक और जन हितैषी मीडिया का कर्तव्य है। पर पिछले दिनों अस्पतालों में घटी घटनाओं पर मीडिया का रुख निराशाजनक रहा।

कोलकाता के सरकारी अस्पताल में एक मरीज की मौत के बाद परिजनों ने डॉक्टरों के साथ मारपीट की। निश्चित रूप से डॉक्टरों के साथ हमदर्दी होनी चाहिए और हमदर्दी जताई भी गई। तृणमूल सरकार ने अपने चिर-परिचित अंदाज में डॉक्टरों से बात करने से इनकार कर दिया। ममता बनर्जी पहले भी ऐसा कर चुकी हैं। पर तब उनकी ज्यादा आलोचना नहीं होती थी, क्योंकि उन्होंने माकपा को हराकर गद्दी संभालने का बड़ा काम जो किया था! अब चूंकि भाजपा उनको हटकर गद्दी संभालने की तैयारी में है, तो हालात बदले हुए हैं और मीडिया का रुख भी बदला हुआ है। अस्पताल के दरवाजे पर भाजपा की भीड़ प्रदर्शन करने पहुंच गई। देश भर के डॉक्टरों ने हड़ताल शुरू कर दी। यह चौबीस घंटे देखी जाने वाली खबर बन गई। डॉक्टरों की सुरक्षा के लिए विशेष कानून की जरूरत महसूस हुई, जैसे कि अभी तक उनसे मारपीट करना कानूनी था।

इसी बीच, बिहार में मुजफ्फरपुर के सरकारी अस्पताल में सौ से भी अधिक बच्चे चमकी बुखार से मर गए। कई दिनों तक यह खबर स्थानीय अखबारों में छिपी रही। फिर जब मरने वाले बच्चों की संख्या बढ़ने लगी, तो मीडिया ने इसका संज्ञान लिया, पर मंत्रियों पर टीका-टिप्पणी नहीं की गई। फिर मंत्रियों का दौरा शुरू हुआ और अस्पताल को बेहतर बनाने का वादा किया गया, जो 2013 में भी किया गया था। केंद्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री पधारे और उन्होंने प्रेस वार्ता भी की। अंत में मुख्यमंत्री भी आए। यह ऐसी बीमारी है, जो उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल से बिहार के तराई के इलाके में हर साल फैलती है। इसका इलाज है। इससे बचने के लिए टीका भी है। लेकिन कभी टीका नहीं लगाया जाता।

बीमारी और मौतों की गंभीरता पर पर्दा डालने के लिए कहा गया कि वे बच्चे लीची खाने से मरे। गरीबों के पास अपने बच्चों को लीची खिलाने के लिए पैसा होता, तो वे बच्चे कूपोक्षण के शिकार न बनते। दरअसल एक डॉक्टर ने बीमार बच्चों का सर्वेक्षण करते हुए पाया कि वे कुपोषण के शिकार हैं। डॉक्टर ने यह भी पाया कि बच्चे भूख मिटाने के लिए कच्ची लीची खा लेते हैं, जिससे उनका पेट खराब हो जाता है और चमकी बुखार की आशंका बढ़ जाती है।

पिछले साल केरल में एक नई बीमारी-निपाह वायरल-आ पहुंची थी। मरीजों की भर्ती के बाद ही पता चल पाया कि बीमारी का स्रोत क्या है। केरल की सरकार तत्काल सक्रिय हो गई। विदेश से भी संक्रमण के विशेषज्ञ बुलाए गए और बीमारी पर काबू पा लिया गया। संक्रमण और वायरस से संबंधित दुनिया के सबसे बड़े शोध संगठन ने केरल के मुख्यमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री को आमंत्रित कर उनके प्रयासों को सराहा। पर इस बारे में किसको पता है?

-लेखिका माकपा पोलित ब्यूरो की सदस्य हैं।

हरियाली और रास्ता

मुख्य अतिथि की सीख

एक पुलिस कमिश्नर की कहानी, जिसने सैकड़ों विद्यार्थियों को प्रेरित किया।

नितिन पढ़ने में अच्छा था, लेकिन सोच नहीं पा रहा था कि भविष्य में उसे क्या बनना है। वार्षिकोत्सव पर उसके स्कूल में पुलिस कमिश्नर को मुख्य अतिथि के तौर पर बुलाया गया था। छात्रों को संबोधित करते हुए वह बोले, दोस्तो, मैं आज जो भी बन पाया हूं, वह सब मेरे माता-पिता की सिखाई हुई बातों की वजह से है। इसमें मेरे शिक्षकों का योगदान भी कम नहीं है। मेरे पिता बरेली के पास एक छोटे-से गांव में किसान थे। हमारे पास जमीन का एक छोटा टुकड़ा था, जिस पर हम आलू उगाते थे। पिताजी पूरा खेत जोतते थे तथा मां और मैं मिलकर पतली-पतली नालियों-से कतार में बीज डालते जाते थे। फिर मेरे दोनों भाई उन पर खाद का मिश्रण डालते थे। मुझे अब भी याद है कि वे आलू कितने मीठे हुआ करते थे। खेती के दौरान पिता मुझे समझाया करते थे कि बेटा तुमने देखा कि बीज कितनी जल्दी आलू बन जाता है। फिर आलू से तरह-तरह के व्यंजन तैयार होते हैं, जिसका हम सब आनंद उठाते हैं। हमारे रिश्ते भी इसी तरह पककर तैयार होते हैं। हमारा हरेक भाव बीज की तरह होता है, जो समय के साथ परिपक्व होता जाता है। अलग-अलग परिस्थितियां उन बीजों के लिए खाद की तरह काम करती हैं। ऐसे ही समय पानी होता है। यानी आज मैं जो भी हूं,उसके बीज मैंने काफी पहले बोए थे। उन्हीं के परिणामस्वरूप मेरा वर्तमान इतना खूबसूरत और खुशहाल है। और मेरा वर्तमान भी उस खेत की ही तरह है, जो नई फसल के लिए एकदम तैयार है। मैं आज जो भी करूंगा, वह मेरे आनेवाले कल के लिए एक बीज की तरह होगा। दोस्तो, मुझे यकीन है, जो बीज मैं आज आपको देकर जा रहा हूं, आप उसे अपने मन में जरूर सींचेंगे। ये बातें सुनकर नितिन को अपने भविष्य की राह दिखने लगी।

अपनी सोच से जो खुद को जीत ले, उसे जिंदगी में कोई नहीं हरा सकता।

खुली खिड़की

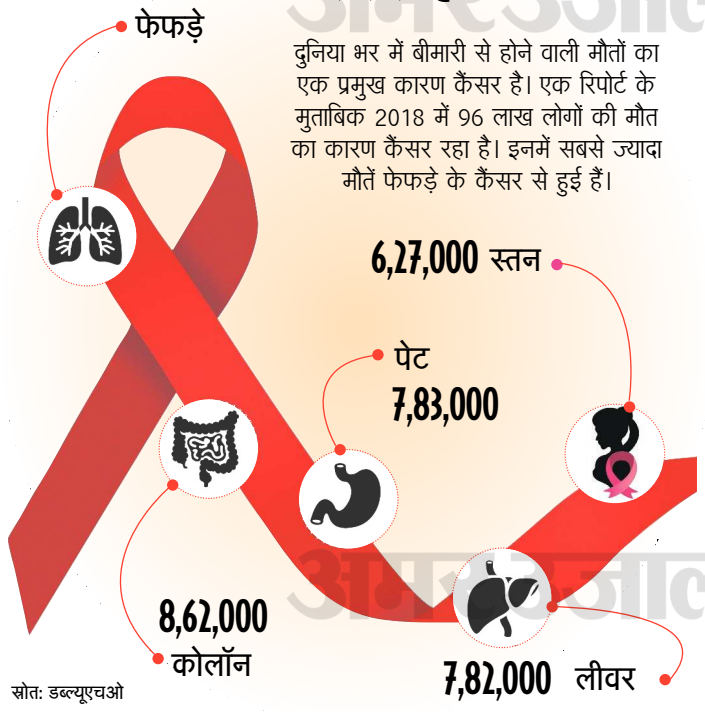

गरीब कौन है

किसान जब अपनी फसल काट लेते थे, तो उसके बाद जो अन्न-कण पड़े रह जाते थे, उन्हें बीन करके महर्षि कणाद अपना जीवन चलाते थे। राजा को जब इसका पता चला, तो उसने धन-सामग्री लेकर मंत्री को उनके पास भेजा। महर्षि ने मंत्री से कहा, यह धन तुम उन लोगों में बांट दो, जिन्हें इसकी जरूरत है। इस तरह राजा ने तीन बार अपने मंत्री को भेजा और तीनों बार महर्षि ने कुछ भी लेने से इनकार कर दिया। अंत में राजा स्वयं उनके पास गया। वह अपने साथ बहुत-सा धन ले गया। उसने महर्षि से प्रार्थना की कि वह उसे स्वीकार कर लें, किंतु महर्षि बोले, राजन यह धन उन्हें दे दो, जिनके पास कुछ नहीं है। मेरे पास तो सब कुछ है। राजा को विस्मय हुआ! जिसके तन पर एक लंगोटी मात्र है, वह कह रहा है कि उसके पास सब कुछ है। उसने लौटकर सारी बात अपनी रानी से कही। वह बोली, आपने गलती की। ऐसे संत के पास कुछ देने के लिए नहीं, लेने के लिए जाना चाहिए। राजा उसी रात महर्षि के पास गया और उन्होंने उनसे क्षमा मांगी। कणाद ने कहा, राजन, तुम गरीब किसे कहते? मुझे देखो और अपने को देखो। मैं कुछ नहीं मांगता, कुछ नहीं चाहता। इसलिए अनायास ही सम्राट हो गया हूं। एक संपदा बाहर है, एक भीतर है। जो बाहर है, वह आज या कल छिन ही जाती है। जो भीतर है, वह मिलती है, तो खोती नहीं। उसे पाने पर फिर कुछ भी पाने को नहीं रह जाता।

सत्संग

-संकलित